प्रातःक्लास 8.8.65 ॐ पिताश्री

R– तुम्ही हो माता ..... ओमशान्ति। महिमा करते हैं बेहद के बाप की ; क्योंकि बेहद का बाप बेहद की शान्ति और सुख का वर्सा देते हैं। भक्ति मार्ग में पुकारते भी हैं बाबा आओ आकर हमको शान्ति और सुख दो। भारतवासी 21जन्म सुखधाम में रहते हैं। बाकी जो भी आत्माएं हैं वो शान्तिधाम में रहती हैं। तो बाप के दो वर्से हैं सुखधाम और शान्तिधाम। इस समय ना शान्ति है ना सुख है ; क्योंकि पतित भ्रष्टाचारी दुनियॉ है तो जरूर कोई दुःखधाम से सुखधाम ले जाने वाला चाहिए। बाप को खेवैया भी कहते हैं। विषय सागर से क्षीर सागर में ले जाने वाला। बच्चे जानते हैं बाप हमको पहले शान्तिधाम घर ले जावेंगे ; क्योंकि अब नाटक पूरा होता है। यह बेहद का खेल है। इसमें ऊँच ते ऊँच क्रिएटर , डायरैक्टर ,मुख्य एक्टर कौन है? ऊँच ते ऊँच है भगवान। उनको ही सबका बाप कहा जाता है। स्वर्ग को रचता है। फिर भी जब मनुष्य दुःखी होते हैं तो लिबरेट भी करते हैं। रुहानी पन्डा भी है। सभी आत्माओं को शान्तिधाम ले जाते हैं। वहॉ निराकार आत्माएं रहती हैं। यह आर्गन्स यहॉ मिलते हैं जिससे आत्मा बोलती है। आत्मा खुद कहती है मैं पहले 2 सुखधाम में थी तो शरीर भी सतोप्रधान था। मैं आत्मा 84 जन्म भोगती हूँ। सतयुग में 8जन्म, त्रेता में 12जन्म,फिर 63जन्म । द्वापर–कलियुग में हम पतित बनते हैं। यह आत्मा को नालेज मिलती है। 84जन्म पूरे हुए फिर पहले नम्बर में जाना है। बाप ही आय पावन बनाते हैं। आत्माओं से बात करते हैं। आत्मा शरीर से अलग है तो कुछ भी आवाज नहीं कर सकते। जैसे रात को शरीर से अलग हो जाते हैं। आत्मा कहती है मैं इस शरीर से कम करते थक गया हूँ। अब विश्राम करता हूँ। आत्मा और शरीर अलग चीज है। यह शरीर अब पुराना है। यह है ही पुरानी पतित दुनियॉ। भारत नया था तो इसको स्वर्ग कहा जाता था। अब नर्क है। सब दुःखी हैं। एक–दो को मूत पिलाते रहते हैं। इसलिए सन्यासी लोग घर–बार छोड़ जाते हैं। स्त्री को नागिन नर्क का द्वार समझते हैं। बाप आकर कहते हैं इन बच्चियों द्वारा तुमको स्वर्ग का द्वार मिलेगा। बाप शिक्षा देते है पावन बन स्वर्ग का मालिक बनो। <u>पतित</u> <u>बनने</u> से तुम नर्क के मालिक बन पड़े हो। यहॉ 5 विकारों का दान दिया जाता है। आत्मा कहती है बाबा आप हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हो। हम प्रतिज्ञा करते हैं हम पवित्र बन आपके मददगार जरूर बनेंगे। बाप का बच्चा जो आबिडियन्ट रहता है वो ही सपूत कहा जाता। कपूत को वर्सा मिल ना सके। यह बाप बैठ समझाते हैं निराकार भगवान के यह निराकारी आत्माएं बच्चे हैं। फिर प्रजापिता ब्रह्मा के सन्तान बनते हैं तो बहन–भाई हो जाते । यह जैसे ईश्वरीय घर है। और कोई सम्बन्ध नहीं। भल घर में मित्र–सम्बन्धी आदि को देखते हैं;परन्तु बुद्धि में है हम बाप दादा के बने हैं। वो बाप यह दादा। इनमें परमपिता का प्रवेश हुआ है तुमको ज्ञान सुनाने। नहीं तो निराकार आवे कैसे ? गर्भ जेल में तो आ ना सके। यहॉ गर्भ जेल में सजाएं खाते हैं। सतयुग में जेल होता नहीं। वहॉ पाप ही नहीं करते;क्योंकि रावण है नहीं। इसलिए वहॉ गर्भ महल कहा जाता है। जैसे पीपल के पत्ते पर कृष्ण दिखाते हैं। वो भी गर्भ जैसे सागर है। सतयुग में ना गर्भजेल होता ना वो जेल होता । आधा कल्प है नई दुनियॉ। कलियुग है पुरानी दुनियॉ। कलियुग से फिर सतयुग जरूर बनना है। चक्कर रिपीट होता रहता है। यह बेहद का चक्कर है जिसका नालेज बाप ही समझाते हैं ; क्योकि वह बाप ही नालेजफुल है। इनकी आत्मा भी नहीं समझा सकती। यह पतित थे। पहले पावन थे फिर 84 जन्म लेते पतित बने हैं। तुम्हारी आत्मा भी पावन थी। फिर 84 जन्म ले पतित बनी है। बाप कहते हैं मैं इस समय पतित दुनियॉ का मुसाफिर हूँ ; क्योंकि पतित बुलाते हैं आकर पावन बनाओ। मुझे अपना परमधाम छोड़ पतित दुनियॉ, पतित शरीर में आना पड़ता है। यहॉ पावन शरीर है नहीं। पहले नम्बर में पावन शरीर है ल.ना. का। यह तो जानते हो जो अच्छे कर्म करते हैं वह अच्छे कुल में जन्म लेते हैं। बुरे कर्म करने वाले बुरे कुल में जन्म लेते हैं। अभी तुम पवित्र बन रहे हो। पहले 2

विष्णु कुल में जन्म लेंगे। तुम मनुष्य से देवता बनते हो। आदि सनातन देवी देवता धर्म किसने स्थापन किया ? यह कोई नहीं जानते ; क्योंकि शास्त्रों में सब झूठ लिख दिया है। 5000 के चक्कर को लाखों वर्ष दे दिए हैं। यह शास्त्र पढ़ते 2 , भक्ति करते 2 और ही दुर्गति को पाया है। यही भारत स्वर्ग था। अब नर्क है।अब जो बाप द्वारा ब्राह्मण बनेंगे वो ही देवता बनेंगे। स्वर्ग के द्वार देख सकेंगे। स्वर्ग का नाम ही कैसा अच्छा है। देवी देवताएं ही फिर वाममार्ग में आते हैं तो पुजारी बनते हैं। सोमनाथ का मन्दिर किसने बनाया?सबसे बड़ा है यह सोमनाथ का मन्दिर। जो सबसे साहुकार था उसने बनाया होगा। जो पहले सतयुग का महाराजा महारानी लक्ष्मी–नारायण थे वो ही जब पूज्य से पुजारी बनते हैं तो शिवबाबा जिसने विश्व का मालिक बनाया है उनका मन्दिर बनाते हैं। खुद कितना साहुकार होंगे। तब तो इतना मन्दिर बनाया जिसको मुहम्मद गजनवी ने लूटा है। सबसे बड़ा मन्दिर है शिवबाबा का। वो है विश्व का रचयिता। खुद मालिक नहीं बनते हैं। बाप जो भी सेवा करते हैं उनको निष्काम सेवा कहा जाता है। बच्चों को स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। खुद नहीं बनते हैं। खुद निर्वाणधाम में बैठ जाते हैं।जैसे मनुष्य 60 वर्ष बाद वानप्रस्थ में जाते हैं। गुरू आदि को लेकर बैठ जाते हैं। कोशिश करते हैं हम भगवान से जाकर मिलें ; परन्तु कोई भी मिलते नहीं हैं। सभी का लिबरेटर और गाइड एक ही बाबा है। और सभी हैं जिस्मानी यात्रा करने वाले। अनेक प्रकार की यात्राएं करते हैं। यह है रुहानी यात्रा। बाप सब आत्माओं को अपने साथ शान्तिधाम में ले जाते हैं। अभी बाप तुम बच्चों को विष्णुपुरी में ले जाने लिए लायक बना रहे हैं। बाप आते ही हैं सेवा करने। बाप कहते हैं इस पुरानी दुनियॉ में कोई से भी दिल ना लगाओ। जाना है नई दुनियॉ में। तुम सब आत्माएं जो साढ़े पॉच सौ करोड़ हैं सब ब्रदर्स हैं। इसमे मेल भी हैं तो फीमेल भी हैं। सतयुग में तुम पवित्र रहते थे। उसको कहा ही जाता है पवित्र दुनियॉ। एक बच्चा होता है। यहॉ तो 5–7 बच्चे पेट चीरकर निकालते हैं। सतयुग में ला बना हुआ है। जब समय होता है तो दोनों को सा. हो जाता है। अब बच्चा होने वाला है। इसको कहा जाता है योगबल। पूरे टाइम पर बच्चा पैदा हो जाता। कोई तकलीफ नहीं। कब रोने का आवाज़ नहीं। आजकल तो कितनी तकलीफ से बच्चे पैदा होते हैं। यह है ही दुःखधाम। सतयुग है सुखधाम। अभी तुम पढ़ रहे हो सुखधाम का मालिक बनने। इस जन्म की पढ़ाई का पद तुमको दूसरे जन्म में मिलता है। जिस्मानी पढ़ाई अभी ही पढ़ते हैं। अभी ही फल भोगते हैं। तुम इस पढ़ाई का फल दूसरे जन्म में पाते हो। बाप कहते हैं हम तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ जिनको भगवान भगवती कहते हैं। लक्ष्मी भक्ति नारायण भगवान। सतयुग आदि मे इन्हों को किसने बनाया?जबकि कलियुग अन्त में कुछ नहीं है। भारत कितना कंगाल है। भीख मॉगते रहते हैं। बाप कहते हैं मैं ही सबको सदगति देने आता हूँ। सतयुग–त्रेता में तुम सदा सुखी रहते हो। बाप इतना सुख देते हैं। इसलिए भक्ति मार्ग में भी फिर उनको याद करते हैं। बच्चा मर जावेगा तो भी कहेंगे हे भगवान हमारा बच्चा मार डाला । बाप कहते हैं जबकि तुम कहते हो सब कुछ ईश्वर ने दिया है। उसने ही लिया फिर तुम रोते क्यों हो ? मोह क्यों रखते हो ? स्वर्ग में मोह होता नहीं। वहॉ जब शरीर छोड़ने का टाइम होता है तो बैठे2 खुशी से छोड़ देते हैं। शरीर भी टाइम पर छोड़ते। स्त्री कब विडो (विधवा) बनती नहीं। जब टाइम पूरा होता है ,बूढ़ा होता है तो समझते हैं अब फिर जाकर बच्चा बनेंगे। फिर वो भी बूढ़े बन जाते हैं तो शरीर छोड़ देते हैं सर्प का मिसाल । अभी तुम जानते हो यह कलियुगी शरीर बहुत पुरानी खाल है। आत्मा भी पतित है तो शरीर भी पतित है। अब बाप से योग लगाय पावन बनना है। यह है भारत का प्राचीच योग। सन्यासियों का तो हठयोग है। जीते जी स्त्री को विधवा

बना देते। बच्चे आर्फन बन पड़ते। उनमें बहुत करके पुरुष ही सन्यासी बनते हैं। आगे जंगल में रहते थे। अब तमोप्रधान होने से जंगल में रह नहीं सकते। शहर में घुस आते हैं। फिर माताएं भी उन की चेली बन जाती हैं। जिन माताओं की वह निन्दा करते हैं,शिवबाबा कहते हैं मैं इन द्वारा ही स्वर्ग का द्वार खोलता हूँ। माता गुरू बिगर किसका कल्याण हो ना सके। तुम माताओं द्वारा पुरुष भी ज्ञान पाते हैं। पुरुष किसकी सदगति कर नहीं सकते। बाप की आय सदगति करते हैं फिर तुमको सिखलाते हैं। तुम मास्टर सदगति दाता बन जाते हो। सबको कहते हो मौत सामने खड़ा है बाप को याद करो। यह सब खतम हो जाना है। बाम्ब्स आदि बनाने वाले खुद भी मानते हैं इनसे विनाश होना है; परन्तु पता नहीं कौन प्रेरता है। समझते हैं एक बाम्ब्स फेंकने से ही सब खतम हो जावेंगे। बाकी थोड़ा समय है। जब तक तुम कॉटों से फूल बन जाओ । यह है कॉटों की दुनियॉ । भारत फूलों की दुनियॉ थी। अब है वैश्यालय। पहले था शिवालय अर्थात् शिव द्वारा स्थापन किया हुआ स्वर्ग।। वैश्यालय रावण ने बनाया है। तुम पढ़ रहे हो नई दुनियॉ के लिए । भगवान एक ही निराकार है। मनुष्य को कह ना सकें। दुःखहर्ता सुखकर्ता वो ही बाप है। भगवानोवाच्य बच्चों प्रति मैं तुमको नर से नारायण, पतित मनुष्य से पावन देवता बनाता हूँ। यह पुरानी दुनियॉ विनाश होनी है। तुम चले जावेंगे अपने घर। यह ड्रामा को समझना है। ड्रामा को जो ना समझे उनको जानवर से भी बदतर कहा जाता। इस समय मनुष्य बन्दर से बदतर है। क्रोध आता है तो कैसे बाम्ब्स से मार डालते हैं सबको। इन पर कौन केस करेगा ? फिर पिछाड़ी में ट्रिब्युनल बैठती है। सबका हिसाब–किताब चुक्तू कर देते हैं। यह समझने की बातें हैं। बाप कहते हैं हे आत्माओं मैं तुम्हारा बाप आया हूँ। अब मेरी श्रीमत पर चलो तो तुम श्रेष्ठ स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। वो मनुष्य मनुष्यों के गाइड बनते। बाप गाइड बनता है सब आत्माओं का। आत्मा ही कहती है हे पतित पावन । अब बाप हमको पुण्यात्मा बना रहे हैं। स्वर्ग में पाप होता नहीं। यहॉ पाप बिगर कोई जन्म नहीं ले सकते। सन्यासी भल चले जाते हैं फिर भी जन्म माता के ही गर्भ से मिलता है। मुफ्त में गृहस्थियों का खाते हैं तो जन्म भी उन्हों के पास लेना पड़े। सतयुग में देवताएं घड़ी 2 सन्यास नहीं करते। वो तो प्रालब्ध है। यह यूनिवर्सिटी है। राजयोग बाप के सिवाय कोई सिखला ना सके। बाप कहते हैं मैं लोन ले आता हूँ। आत्मा तो दूसरे शरीर में आ सकती है ना। ब्राह्मणों को खिलाते हैं उन्हों को माथा टेकते हैं। समझेंगे बाप की आत्मा को नमन करता हूँ। शरीर तो चला गया। आत्मा को बुलाया जाता है। आगे पूछते भी थे। आत्मा का आवाहन होता है। यह सब ड्रामा मे पार्ट है। आत्मा शरीर छोड़ आती नहीं है। आगे बतलाते थे हम बहुत सुखी बैठे हैं। आप फिकर ना करो। यह ड्रामा की नूंध है जो रिपीट होता है। यह ड्रामा जूँ मिसल चलता है। इनको फिरने में 5000 वर्ष लगता है। कहते हैं पत्ते 2 में ईश्वर है। पत्ता हिलता है इनमें भी आत्मा है; परन्तु नहीं। यह तो हवा से हिलता है। तुम यहॉ जैसे बैठे हो फिर 5000वर्ष बाद बैठेंगे। इस ड्रामा के राज को सिवाय तुम्हारे सारी दुनियॉ में और कोई नहीं जानते। सब पतित हैं बाप के आक्युपेशन को नहीं जानते। सिर्फ कह देते सर्वव्यापी है। कण 2 में है। बाप कहते हैं कितने मूर्ख बन पड़े हो। तुमको तो मेरे से वर्सा लेना है। तुम फिर कह देते हो सर्वव्यापी। कुत्ते , बिल्ले में भी है। मेरी भी तुम ग्लानी करते रहते हो। इसलिए मुझे आना पड़ता है। गीता में भी हैं ना यदा यदा ... . इस सारी सृष्टि को लंका कहा जाता है। रावण का राज्य है। सभी शोक वाटिका में हैं। स्वर्ग में दुःख की बात नहीं। बाप आया है शान्तिधाम ले जाने तो इस दुःखधाम को भूल जाना है। श्री 2 बाप श्रेष्ठ बनाते हैं। माया रावण भ्रष्ट बनाती है। यह खेल है। अभी बाप से वर्सा लिया सो लिया। नहीं तो फिर कब ले ना सकेंगे। यह 21जन्मों लिए कमाई बड़ी ऊँची है। अच्छा , मात पिता का सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमार्निंग।